(NAAC द्वारा B++ ग्रेड से मान्यता प्राप्त)

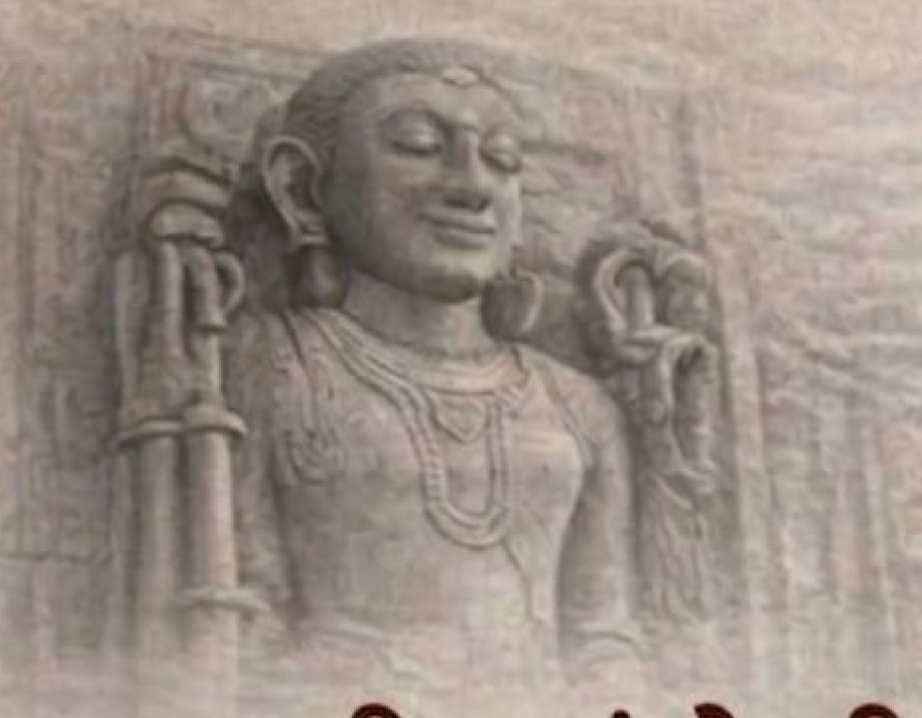

राष्ट्रीय संगोष्ठी

विन्ध्य क्षेत्र का पुरातात्विक वैभव

(प्राचीन भारत के विशेष संदर्भ में)

(11-12 अप्रैल, 2026)

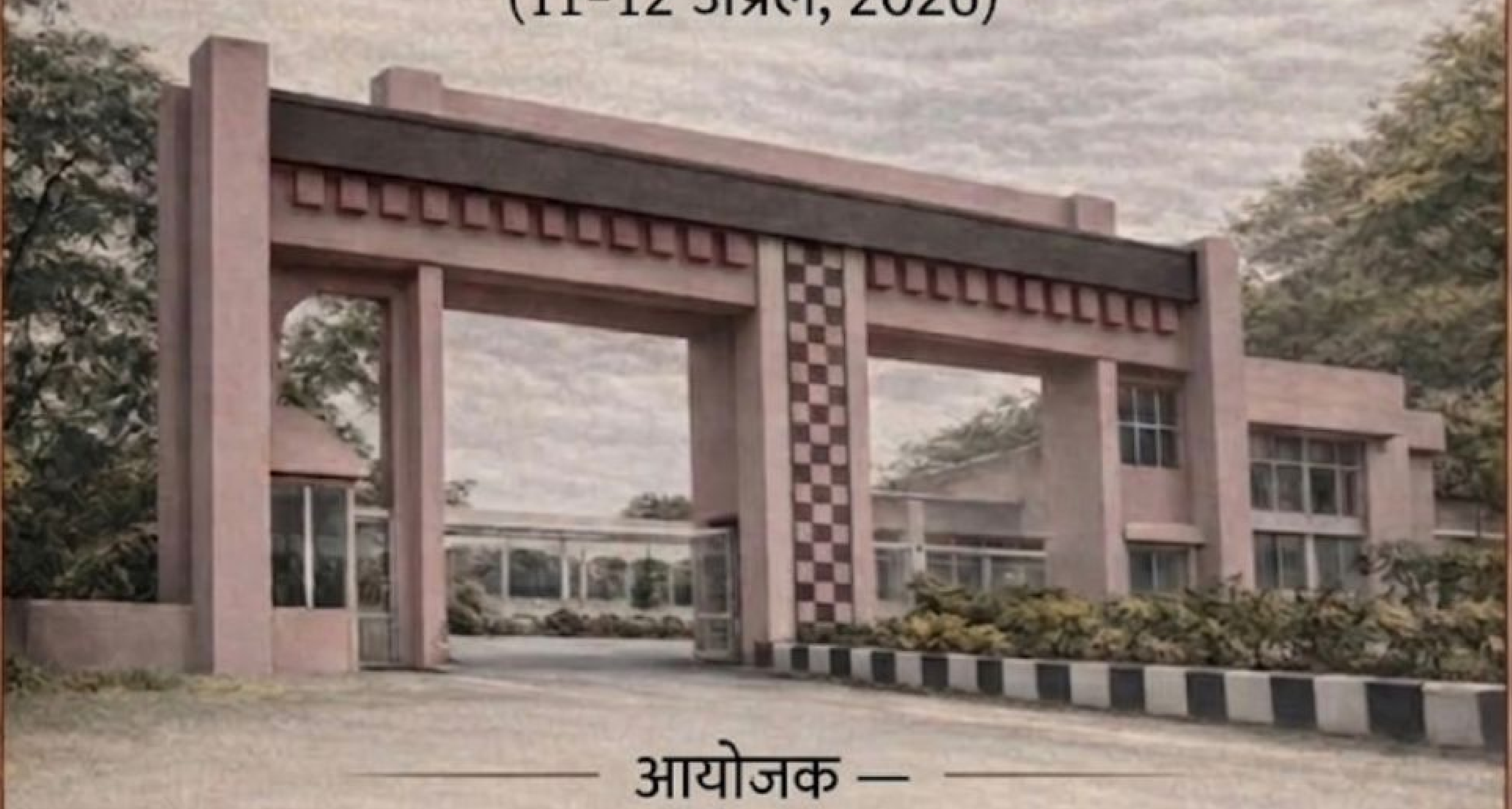

आयोजक —

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा

(मध्य प्रदेश)

विश्वविद्यालय

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा की स्थापना 20 जुलाई 1968 को राज्य विश्वविद्यालय के रूप में की गई थी। इसका नाम प्रतिष्ठित स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कैप्टन अवधेश प्रताप सिंह के नाम पर रखा गया, जो एक राष्ट्रीय नेता और विंध्य प्रदेश के पहले प्रधानमंत्री रहे हैं। फरवरी 1972 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा विश्वविद्यालय को मान्यता प्रदान की गई थी। विश्वविद्यालय में 16 शिक्षण विभाग और 12 अध्ययन केंद्र हैं, जिनमें 50 से अधिक पाठ्यक्रम संचालित हैं। विविध विभागों से शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी देश के कोने-कोने में विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। माननीय कुलगुरु प्रो. राजेन्द्र कुमार कुडरिया, के नेतृत्व में विश्वविद्यालय निरंतर नई उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा है।

विभाग

भारत सरकार के द्वारा संचालित 8वीं पंचवर्षीय योजना में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग वर्ष 1984 से विश्वविद्यालय में शिक्षण विभाग के रूप में संचालित हुआ। स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोध जैसी उच्च शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से विभाग में अनेक उल्लेखनीय कार्य किए गए। प्रथम विभागाध्यक्ष प्रो. राधाकांत वर्मा के नेतृत्व में विभाग ने अपना पहला उत्खनन विश्वविद्यालय के समीप बीहर नदी के किनारे स्थित इटहा में 1987 में प्रारंभ किया। इसके अलावा पटपरा (जिला सीधी 1992), पडोखर,(जिला रीवा 1994) आदि में भी पुरातात्विक उत्खनन कार्य किया गया।

निरंतर सर्वेक्षण एवं उत्खनन से प्राप्त सामग्री को संग्रहित करने के उद्देश्य से विभाग में संग्रहालय स्थापित किया गया, जिसमें प्रागैतिहासिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक की विविध पुरा सामग्री संग्रहित की गई है। विभाग द्वारा विंध्य क्षेत्र के अनेक पुरास्थलों का गहन सर्वेक्षण किया गया, जिसमें शैल चित्रकला , मंदिर, मूर्तिकला, स्तूप आदि से संबंधित नवीन पुरास्थल प्रकाश में आए हैं, जिनसे संबंधित जानकारी विभागीय संग्रहालय में प्रदर्शित है।

वर्तमान में विभाग में बी.ए. आनर्स एवं स्नातकोत्तर (प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व) तथा बी.बी.ए. एवं एम.बी.ए. (पर्यटन) के पाठ्यक्रम संचालित हैं। साथ ही शोध के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं।

पहुँच मार्ग

रीवा, मध्यप्रदेश राज्य का संभाग मुख्यालय है, जो रेल और सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। रीवा का निकटतम हवाई अड्डा खजुराहो एवं प्रयागराज हवाई अड्डा है। रीवा रेलवे स्टेशन प्रयागराज–कटनी रेल मार्ग पर सतना जंक्शन होते हुए स्थित है। यह सड़क मार्ग से भी सतना, जबलपुर, प्रयागराज और खजुराहो से जुड़ा है। इसके अलावा कुछ समय पूर्व रीवा में हवाई अड्डा प्रारंभ किया गया है, जिसमें भोपाल, दिल्ली,रायपुर और इंदौर से हवाई सेवा उपलब्ध है।

महत्वपूर्ण बिंदु

विंध्य क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत के विभिन्न पक्षों के अध्ययन के लिए प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.) के तत्वावधान में “विंध्य क्षेत्र का पुरातात्त्विक वैभव” विषय पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के उप-विषय निम्नलिखित हैं, जिन पर विद्वान/शोधार्थी अपने-अपने आलेख प्रस्तुत कर सकते हैं—

- प्राचीन भारत के प्रमुख प्रागैतिहासिक स्थल एवं संस्कृतियां
- प्राचीन भारत की शैल चित्रकला
- प्राचीन भारत की वास्तुकला एवं मूर्तिकला
- प्राचीन भारत का साहित्यिक विरासत
- प्राचीन भारत की लोक कला एवं परम्पराएं
- प्राचीन भारत में विज्ञान एवं तकनीकी
- मध्य प्रदेश के प्रमुख पुरातात्त्विक स्थल एवं मंदिर
- मध्य प्रदेश के प्रमुख बौद्ध पुरास्थल
- मध्य प्रदेश के प्रमुख जैन पुरास्थल
- मध्य प्रदेश के प्रमुख धार्मिक एवं सांस्कृतिक पुरास्थल
- विंध्य क्षेत्र की प्राचीन ज्ञान परंपरा
- विंध्य क्षेत्र की जनजातीय विरासत

नोट:

1. समस्त विद्वान एवं शोधार्थी से अनुरोध है कि वे अपने शोधपत्र हिंदी अथवा अंग्रेजी में तैयार करें। हिंदी के शोधपत्र Kruti Dev 10 (Font Size 14) तथा अंग्रेजी के शोधपत्र Times New Roman (Font Size 12) में तैयार कर ई-मेल historyseminaraps@gmail.com पर भेजें।
2. शोध सार/पूर्ण शोधपत्र भेजने की अंतिम तिथि – 30.03.2026
3. पंजीयन शुल्क:
   - प्राध्यापक एवं सहायक प्राध्यापक – ₹700/-
   - अतिथि विद्वान एवं शोध छात्र – ₹500/-
   - विभाग के छात्र – ₹300/-
4. पंजीकृत प्रतिभागियों के लिए भोजन एवं आवास की व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा की जाएगी।

भुगतान विवरण:

UPI ID: rapsu@indianbk

अथवा

Account Name: Registrar APSU Rewa
Account Number: 7831905108
IFSC Code: IDIB000R632
Bank: Indian Bank

Payments:
Participants can pay the fees by NEET/UPI in favour of:
Registrar, APSU University, Rewa
A/c No.: 7831905108
Bak Name: Indian Bank
Branch: Rewa A.P.S. University campus, Rewa (M.P.) India 486003
IFSC: IDIB000R632

पंजीयन लिंक:

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSdaWbgRZO5a5JeDXnDUvIfjD9mj9rU9w9MJOWDQTAJEwi3mMOTQ/viewform?usp=publish-editor

---

संपर्क सूत्र:

प्रो. महेश चन्द्र श्रीवास्तव – 9425194676
डॉ. शंकर लाल यादव – 9893538433
डॉ. गोविंद सिंह दांगी – 9096496652

राष्ट्रीय संगोष्ठी
“हाइब्रिड मोड”
विंध्य क्षेत्र का पुरातात्विक वैभव
(11–12 अप्रैल, 2026)

मुख्य संरक्षक
प्रो. राजेन्द्र कुमार कुड़रिया
कुलगुरु,
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सह- संरक्षक
डॉ. नीरजा नामदेव
कुलसचिव,
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

विभागाध्यक्ष
प्रो. महेश चन्द्र श्रीवास्तव
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

संयोजक
डॉ. शंकर लाल यादव

सह- संयोजक
डॉ. गोविंद सिंह दांगी

आयोजन समिति
डॉ. अजय सिंह
डॉ. अनुराग तिवारी
डॉ. चन्द्र प्रकाश मिश्रा
डॉ. प्रीति तिवारी
श्री ए. पी. गर्ग
डॉ. नईमुद्दीन खान

(NAAC Accredited with B++ Grade)

पीएम-उषा PM-USHA

National Seminar

Archaeological Splendour of the Vindhya Region

(With special reference to ancient India)

(11–12 April, 2026)

Organized by

Department of Ancient Indian History, Culture & Archaeology

Awadhesh Pratap Singh University, Rewa

(Madhya Pradesh)

University

Awadhesh Pratap Singh University, Rewa, was established as a state university on 20 July 1968. It was named after the renowned freedom fighter Captain Awadhesh Pratap Singh, who was a national leader and also the first Chief Minister of Vindhya Pradesh. In February 1972, the University Grants Commission (UGC) granted recognition to the university. The university has 16 teaching departments and 12 study centers, offering more than 50 courses. Students from various parts of the country are receiving education here and bringing recognition to the university. Under the leadership of the Honorable Vice-Chancellor Prof. Rajendra Kumar Kudariya, the university is continuously achieving new milestones.

Department

Under the 8th Five-Year Plan of the Government of India, the Department of Ancient Indian History, Culture and Archaeology was approved by the University Grants Commission and has been functioning as a teaching department since 1984. With the objective of providing higher education such as undergraduate, postgraduate, and research programs, the department has undertaken several notable works.

Under the leadership of the first Head of the Department, Prof. Radhakant Verma, the department initiated its first excavation in 1987 at Itaha, located near the Beehar River close to the university. In addition, archaeological excavations were carried out at Patpara (District Sidhi, 1992) and Padokhar (District Rewa, 1994).

To preserve the materials obtained from continuous surveys and excavations, a museum was established in the department, where various artifacts ranging from prehistoric to historical periods have been preserved. The department has conducted extensive surveys of many archaeological sites in the Vindhya region, bringing to light new findings related to rock art, temples, sculptures, stupas, etc. Information related to these is displayed in the departmental museum.

At present, the department offers B.A. (Honours) and postgraduate courses in Ancient Indian History, Culture and Archaeology, as well as B.B.A. and M.B.A. (Tourism). Significant research work is also being carried out in the department.

How to Reach

Rewa, the divisional headquarters of Madhya Pradesh, is well connected by rail and road. The nearest airports to Rewa are Khajuraho and Prayagraj. Rewa railway station lies on the Prayagraj–Katni rail route via Satna Junction. It is also well connected by road to Satna, Jabalpur, Prayagraj, and Khajuraho. Additionally, recently an airport has been developed in Rewa, with air services available from Bhopal, Delhi, Raipur, and Indore.

Important Points

For highlighting various aspects of the cultural heritage of the Vindhya region, a two-day national seminar is being organized by the Department of Ancient Indian History, Culture and Archaeology, Awadhesh Pratap Singh University, Rewa (M.P.) on the theme:

Archaeological Splendour of the Vindhya Region
(in the context of Ancient India)

The sub-themes of this national seminar are as follows, for scholars and researchers:

1. Major prehistoric sites and culture of Ancient India
2. Rock art of Ancient India
3. Architecture and sculpture of Ancient India
4. Literary heritage of Ancient India
5. Folk art and traditions of Ancient India
6. Science and technology in Ancient India
7. Major archaeological sites and temples of Madhya Pradesh
8. Major Buddhist sites of Madhya Pradesh
9. Major Jain sites of Ancient Madhya Pradesh
10. Major religious and cultural sites of Madhya Pradesh
11. Ancient knowledge traditions of the Vindhya region
12. Tribal heritage of the Vindhya region

Note:

1. Hindi papers to be typed in Kruti Dev 10 (Font Size 14) and English papers in Times New Roman (Font Size 12) and sent to historyseminaraps@gmail.com
2. Last date for submission of abstract/full paper: 30.03.2026

Registration Fee:

- Professors & Assistant Professors: ₹700
- Guest Faculty & Research Scholars: ₹500
- Students: ₹300

1. Accommodation and food will be arranged by the university for registered participants.

Payment Details:

Prof. Mahesh Chandra Shrivastava – 9425194676
Dr. Shankar Lal Yadav – 9893534333
Dr. Govind Singh Dangi – 9096496652

Payments:
Participants can pay the fees by NEET/UPI in favour of:
Registrar, APSU University, Rewa

A/c No.:	7831905108
Bnk Name:	Indian Bank
Branch:	Rewa A.P.S. University campus, Rewa (M.P.) India 486003
IFSC:	IDIB000R632

NATIONAL SEMINAR

(Hybrid Mode)

Archaeological Splendour of the Vindhya Region

(11–12 April, 2026)

Chief Patron
Prof. Rajendra Kumar Kudariya
Vice-Chancellor,
Awadhesh Pratap Singh University, Rewa (M.P.)

Co-Patron
Dr. Neerja Namdev
Registrar,
Awadhesh Pratap Singh University, Rewa (M.P.)

Head of Department
Prof. Mahesh Chandra Shrivastava
Dep.of Ancient Indian History, Culture & Archaeology

Convener
Dr. Shankar Lal Yadav

Co Convener
Dr. Govind Singh Dangi

Organizing Committee
Dr. Ajay Singh
Dr. Anurag Tiwari
Dr. Chandraprakash Mishra
Dr. Preeti Tiwari
Shri A. P. Garg
Dr. Nizamuddin Khan